शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आधुनिक भारत में वर्ग

डॉ. रश्मि यादव
सहायक प्राध्यापक (समाज शास्त्र)
शासकीय महाविद्यालय
मकरोनिया, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय समाज में स्तरीकरण का एक प्रमुख आधार नीति-व्यवस्था भी है। एक सामाजिक वर्ग उन व्यक्तियों का योग है जिनकी आवश्यक रूप से एक समाज विशेष में एक-सी सामाजिक स्थिति हो। सामाजिक वर्ग समाज का वह भाग है जिसके सदस्यों की कुछ ऐसी विशिष्ट और सामान्य सामाजिक स्थितियाँ तथा कार्य होते हैं, जिनके आधार पर उनमें यह जागरूकता पनप जाती है कि वे समाज के अन्य समूहों से भिन्न हैं। आज का भारतवासी भी किसी-न-किसी वर्ग का जैसे श्रमिक-वर्ग, शिक्षक-वर्ग, मिल-मालिक वर्ग, व्यापारी-वर्ग, लेखक-वर्ग आदि का न केवल सदस्य है अपितु उसका सक्रिय हिस्सेदार भी है। आधुनिक भारत में वर्ग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

मुख्य शब्द : *वर्ग, समाज, श्रमिक, पूंजीपति, नौकरशाह, शासक।*

भूमिका

प्राचीन समाजों की रचना से लेकर आधुनिक समाजों की रचना को समझने में वर्ग की प्रकृति में होने वाले परिवर्तन की व्याख्या का महत्व है, किन्तु विशेष रूप से आधुनिक समाजों की विवेचना वर्गों की रचना को समझे बिना यदि असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। जब समाज में व्यक्तियों की स्थिति का निर्धारण उनके वैयक्तिक गुणों जैसे शिक्षा, आय, व्यवसाय, आवास की दशा आदि के आधार पर होता है तो समाज में स्तर विभाजन की यह प्रणाली वर्ग व्यवस्था के नाम से जानी जाती है। यह एक खुली व्यवस्था है। इसमें व्यक्ति अपने प्रयास में सफल या विफल होने पर अपने से उच्च या निम्न वर्ग का सदस्य बनता है। यद्यपि यह आसान या सामान्य नहीं है, किन्तु असंभव भी नहीं है।

वस्तुतः वर्ग किसी समाज का एक भाग है, जिसके सदस्यों की उनके द्वारा लौकिक आयाम पर अर्जित स्थिति व प्रतिष्ठा बहुत कुछ समान होती है और इस आधार पर समाज का वह भाग अन्य भागों से पृथक पहचाना जाता है। दूसरे शब्दों में वर्ग समान सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों का समूह है। व्यक्ति लौकिक आयाम जैसे शिक्षा, पेशा, आय, आवासीय दशा या जीवन स्तर आदि पर अपनी अर्जित स्थिति के आधार पर एक वर्ग का सदस्य होता है। समाज में समान अर्जित स्थिति वाले व्यक्ति एक वर्ग की रचना करते हैं। वर्ग के सदस्यों में वर्ग चेतना पाई जाती है। वे न केवल अपनी वर्गीय स्थिति अपितु अपने वर्गीय हित के प्रति भी सचेत होते हैं। वर्ग के आधार पर समाज ऊर्ध्व या सोपानीकृत श्रेणी क्रम में विभिन्न क्षैतिज समूहों या वर्गों में एक पिरामिड के रूप में व्यवस्थित होता है, जिसमें निम्न स्थान पर अवस्थित वर्ग

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

में सर्वाधिक लोग होते हैं। जैसे-जैसे हम पिरामिड में शीर्ष की ओर बढ़ते हैं, व्यक्तियों की संख्या कम होती जाती है। सर्वोच्च स्थान पर अवस्थित समूह या वर्ग का आकार सबसे छोटा होता है। इसमें सदस्यों की संख्या सबसे कम होती है।

प्रत्येक सामाजिक वर्ग को सम्पूर्ण समुदाय में एक निश्चित सामाजिक पद या स्थिति प्राप्त होती है, जिसके आधार पर एक वर्ग को दूसरे वर्ग से पृथक किया जा सकता है परन्तु इस संबंध में यह स्मरणीय है कि सामाजिक चेतना के बिना वर्ग का निर्माण संभव नहीं। जब समुदाय के किसी एक भाग के सदस्य सामाजिक विभेदों (चाहे वे विभेद सम्पत्ति, शिक्षा, व्यवसाय आदि किसी से संबंधित हों) के संबंध में जागरूक या चेतन हो जाते हैं और उसी चेतना को आधार पर अपने को दूसरों से पृथक समझने लगते हैं तभी वर्ग का जन्म होता है।

आधुनिक भारत में नवीन वर्ग व उनकी भूमिकाएँ

आधुनिक भारतीय समाज में अलग-अलग आधारों पर वर्ग विभाजन का अलग-अलग रूप देखा जा सकता है। भारत में आधुनिक अर्थ-व्यवस्था तथा सांस्कृतिक व राजनैतिक परिस्थितियों ने अनेक नवीन वर्गों को जन्म दिया है। यह प्रक्रिया अंग्रेजी शासनकाल से ही स्पष्टतः प्रारम्भ हो गई थी जबकि नवीन सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था का श्रीगणेश हुआ, नवीन शासन-प्रणाली इस देश में लागू की गई तथा एक धर्म-निरपेक्ष शिक्षा (अंग्रेजी शिक्षा) का विस्तार इस देश में हुआ। फलतः नए वर्गों का उदय सम्पूर्ण भारत में इस कारण संभव हुआ कि एक समय अंग्रेजी शासन-व्यवस्था सम्पूर्ण देश में छा गई एवं सारा देश एक सामान्य राजनैतिक व आर्थिक व्यवस्था के अन्तर्गत आ गया। भारतीय समाज में अलग-अलग आधारों पर वर्ग विभाजन का अलग-अलग स्वरूप देखा जा सकता है। भारतीय समाज में वर्ग निर्धारण के अनेक आधार रहे हैं जैसे - सम्पत्ति या धन और आय, परिवार तथा नातेदारी, निवास का स्थान, निवास की अवधि, व्यवसाय की प्रकृति, शिक्षा, धर्म आदि। आधुनिक भारत के प्रमुख नवीन वर्गों या इनकी भूमिकाओं की संक्षेप में विवेचना इस प्रकार है :-

शासक वर्ग : शासक वर्ग के रूप में अंग्रेजों के इस देश से चले जाने के बाद कांग्रेसजन जो इस समय इन्दिरा कांग्रेस कहलाते हैं, शासक वर्ग के रूप में इस देश में उभरकर सामने आए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लेकर अब तक अधिकांश राज्यों में अधिकतम समय के लिए एवं केन्द्र में सन् 1947 से अधिकांश समय तक इसी शासक वर्ग का ही अधिकार रहा। इसी शासक वर्ग के शासनकाल में विशेष विवाह अधिनियम, 1954, हिन्दु विवाह व विवाह-विच्छेद अधिनियम 1955, दहेज-निरोधक अधिनियम 1961 आदि पारित किए गए, जिनके फलस्वरूप भारतीय परिवार तथा विवाह से संबंधित अनेक परम्परागत कुरीतियों व समस्याओं को हल करने की दिशा में वैधानिक अड़चनें दूर हुई। उसी प्रकार अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम, 1955 के पारित हो जाने से अस्पृश्यता के कलंक को इस देश के माथे से मिटाना सरल हो गया। इसी शासक वर्ग ने पंचवर्षीय योजनाओं (अब 'नीति आयोग') को चालू करके देश के आर्थिक व सामाजिक विकास को साकार रूप देने का प्रयास किया और इसी वर्ग ने समाजवाद और 'गरीबी हटाओ' जैसे नारों को भी बुलन्द किया। पर नारेबाजी अधिक और ईमानदारी से काम कम

होने के कारण आम जनता की परेशानियां आज चरम सीमा तक पहुंच चुकी हैं। इस शासक वर्ग में अच्छे व ईमानदार लोगों की कमी नहीं है, पर अधिक संख्या बेईमान, भ्रष्ट, चरित्रहीन व सुविधावादियों की होने के कारण आज जनता का दुःख बढ़ता ही जा रहा है। अभी हाल ही में केन्द्र सरकार ने 'नोटबंदी' तथा 'जी.एस.टी.' जैसे क्रांतिकारी उपायों से देश के आर्थिक जीवन में क्रांतिकारी सुधार किये हैं।

श्रमिक वर्ग : यह भारत का सबसे विशाल वर्ग है। देश की कुल जनसंख्या का 33 प्रतिशत इसी वर्ग के सदस्य हैं। यह मेहनतकश, सर्वहारा लोगों का वर्ग है जिसके पास रोटी-रोजी कमाने के लिए अपने 'श्रम' के अलावा कुछ भी नहीं होता। इसलिए इस वर्ग के सदस्य मिल और कारखानों में काम करते हैं, खानों एवं चाय-बागानों में दिन-रात मेहनत करते हैं, रिक्शा, ठेला, टैक्सी या बस चलाते हैं, खोतों में काम करते अथवा राज-मजदूरों के रूप में मकान या रास्तों अथवा रेल-लाइनों को बनाते हैं। भारत में आर्थिक तौर पर उनकी स्थिति बहुत ही गिरी हुई है। इन्हें न तो उचित भोजन मिलता है, न पूरे कपड़े और न ही समुसचित निवास। इस वर्ग के असंख्य सदस्य गंदी बस्तियों में रहते हैं, रूखा-सूखा कभी पेट-पर तो कभी आधा-पेट खाते हैं तथा किसी तरह से तन को उल्टे-सीधे कपड़ों से ढ़ककर सभ्यता की खिल्लियाँ उड़ाते हैं। पर इसी वर्ग के सदस्य अपने खून-पसीने को एक करके उत्पादन-कार्य करते हैं, उत्पादित वस्तुओं को ढ़ोते और लादते हैं, यातायात और संचार के साधनों को ठीक रखते हैं तथा मकान व गोदामों को बनाकर माल और मालिक दोनों को सुरक्षित रखते हैं।

राजनैतिक अभिजन वर्ग : यह समाज का प्रमुख वर्ग है। राज्य की सत्ता व शक्ति इस वर्ग के हाथ में केन्द्रित होने से यह जहाँ राजनैतिक, प्रशासकीय तथा सामाजिक-आर्थिक विकास संबंधी नीतियों का निर्धारण करता है, उन्हें लागू करता है, वहीं अपने वर्गीय हितों की पूर्ति में भी सक्षम होता है। कानून व विधान के निर्माण, आर्थिक व वित्तीय प्रबंध, विज्ञान प्रौद्योगिकी के विकास, राष्ट्रीय लक्ष्यों के निर्धारण, योजनाओं के निर्माण आदि महत्वपूर्ण विषयों में दिशा निर्धारण में इस वर्ग की प्रमुख भूमिका होती है। इस वर्ग में मंत्री, सांसद, विधायक, पंचायात एवं निगमों के अध्यक्ष एवं प्रतिनिधि तथा राजनैतिक दलों के पदाधिकारी आदि आते हैं, जो किसी न किसी अंश तक राजनैतिक शक्ति से जुड़े होते हैं। इस वर्ग में अभी हाल तक ऊँची जातियों विशेष रूप से शिक्षित व सम्पन्न ब्राह्मणों का बाहुल्य था, धीरे-धीरे सामंती पृष्ठभूमि के क्षत्रियों एवं शिक्षित व राजनैतिक रूप से जागरूक क्षत्रियों व अन्य ऊँची जातियों के लोगों की इसमें भागीदारी बढ़ी। कालांतर में शिक्षित व सम्पन्न किसान पृष्ठभूमि के मध्यम जातियों की इसमें हिस्सेदारी हुई। आगे चलकर शिक्षा के प्रसार, विधायी आरक्षण तथा राजनैतिक चेतना के विाकस के साथ दलित व अन्य कमजोर वर्गों के लोगों की भी इसमें सार्थक भागीदारी संभव हुई है।

पूँजीपति वर्ग : उद्योग, मिल व कारखानों के मालिक इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। यह औद्योगिक समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ग है। समाज की आर्थिक शक्ति कमोवेश इसी वर्ग के हाथ में आती है। आकार में यह वर्ग सबसे छोटा होता है, किन्तु राष्ट्रीय आय स सम्पत्ति

का बहुत बड़ा भाग इस वर्ग के हिस्से में आता है। चुनाव में राजनैतिक दलों व प्रत्याशियों को चन्दा देकर यह वर्ग आर्थिक नीतियों व निर्णयों को अपने हित में कराने में सफल होता है। राजनैतिक शक्तियों और आद्योगिक घरानों के तार आपस में मजबूती से जुड़े होते हैं। दिखावे के तौर पर राजनेता जनता के हितों की बात करते हैं और जनहित में कुछ नीतियों एवं कार्यक्रमों को लागू भी करते हैं किन्तु यह सब औद्योगिक घराने के साथ मिलीभगत से होता है और ऐसा करते समय इस बात को ध्यान में रखा जाता है कि इससे औद्योगिक घरानों के व्यापक हितों को अधिक क्षति नहीं पहुंचे और यदि किसी एक क्षेत्र में क्षति पहुंचती है तो दूसरे क्षेत्र में उसकी भरपाई कर दी जाती है। विश्व परिदृश्य में समाजवादी अर्थव्यवस्था व शासन प्रणाली के पाँव उखाड़ने के साथ पूँजीवादी व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक व राष्ट्रीय विकास का एकमात्र विकल्प रह गई है। जिसके चलते समाज में पूँजीपति वर्ग का प्रभाव बढ़ा है। आज भारत ही नहीं, दुनिया की राजनीतिक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पूँजीवादी व्यवस्था की पक्षधर है और काफी कुछ हद तक कुछ गिने-चुने पूँजीपति घरानों के इशारों पर चलती है।

व्यापारी वर्ग : समाज की आर्थिक क्रियाओं के निष्पादन में व्यापारी वर्ग बिचैलिये की भूमिका अदा करता है। इसका संबंध प्रधानत: वितरण व विनिमय से है। साधारणत: पूँजीपति या उत्पादनकर्ता वर्ग का उपभोक्ता वर्ग से सीधा आदान-प्रदान नहीं होता। यह कार्य बिचौलियों द्वारा सम्पन्न होता है, जिन्हें हम व्यापारी वर्ग के रूप में जानते हैं। उत्पादित सामग्री का क्रय-विक्रय व्यापारी वर्ग के माध्यम से होता है। पूँजीपति और व्यापारी दोनों वर्गों के बीच चोली-दामन का संबंध होता है। दोनों की रुचि अधिक से अधिक मुनाफा कमाने की होती है। पूँजीपति कच्चा माल कम से कम कीमत पर खरीदकर श्रमिक जो मशीन पर काम कर अपनी मेहनत से उसे कच्चे माल को उत्पादित सामग्री में बदलता है, को कम से कम पारिश्रमिक देकर उत्पादित सामग्री को अधिक से अधिक कीमत पर बेचने की कोशिश करता है। इस प्रक्रिया में व्यापारी उसे मदद करता है। वह थोक भाव से सामान खरीदकर छोटे व्यापारियों को बेचता है और छोटे व्यापारी दुकानदारों को बेचते हैं। दुकानदार उस माल को उपभोक्ता को बेचता है। उपभोक्ता माल की जो कीमत देता है, उसका बहुत कम हिस्सा कच्चा माल तैयार करने वाले और उसे उत्पारित माल में रूपांतरित करने वाले श्रमिक को मिलता है। विक्रय मूल्य का बहुत बड़ा हिस्सा व्यापारी वर्ग के हाथ में चला जाता है। व्यापारी वर्ग पूँजीपति वर्ग की तुलना में आकार में बहुत बड़ा होता है। यह वर्ग भी काफी संगठित और अपने हितों के प्रति बहुत सचेत होता है। आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के चलते समाज में पूँजीपति एवं व्यापारी वर्गों का प्रभाव बहुत बढ़ा है।

कृषक वर्ग : भारतीय समाज अभी भी एक कृषि प्रधान समाज है। इसकी जनसंख्या का लगभग तीन चैथाई भाग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करता है। इसकी अर्थव्यवस्था वस्तुतः कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। औद्योगिकीकरण की धीमी गति को देखते हुए इसके औद्योगिक समाज में रूपांतरित होने में अभी बहुत विलम्ब है। देश में अधिकांश मतदाताओं और उनके प्रतिनिधि

ग्रामीण और कृषि पृष्ठभूमि के हैं। आर्थिक विकास की नीतियों के निर्धारण तथा राजनैतिक निर्णयों को लेने और उन्हें क्रियान्वित करने में कृषकों और कृषि मजदूरों के हितों की अवहेलना नहीं की जा सकती है। यद्यपि कृषक अन्य अधिकांश वर्गों की भाँति आर्थिक रूप से मजबूत, संगठित नहीं हैं तथापि बड़ी संख्या में होने से राष्ट्रीय राजनीति पर उनकी उल्लेखनीय पकड़ और प्रभाव है।

बुद्धिजीवी वर्ग : इस वर्ग में वे लोग आते हैं जो बौद्धिक व रचनात्मक कार्य में संलग्न होते हैं और अपनी आजीविका मानसिक श्रम से अर्जित करते हैं। इस वर्ग में लेखक, विचारक, मूर्तिकार, दार्शनिक, कवि, गीतकार, नृत्यकार, वैज्ञानिक, कलाकार, चित्रकार आदि आते हैं। इस वर्ग के लोग आर्थिक दृष्टि से भले बहुत सम्पन्न नहीं हों किन्तु समाज में इनका बहुत सम्मान व प्रतिष्ठा होती है। ये अपनी रचनाओं व कृतियों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ का रेखांकन करते हैं, समाज में नये मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना करते हैं तथा परिवर्तन की दिशा तय करते हैं। ये बौद्धिक शक्ति के धनी होते हैं और समाज में परिवर्तन व क्रांति को जन्म देते हैं।

नौकरशाह एवं वृत्तिकार (ब्यूरोक्रेट एण्ड प्रोफेशनल): शासन चलाने एवं सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों के संचालन में नौकरशाही की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज में शांति और व्यवस्था बनाये रखने तथा शासन कार्य सुचारु रूप से चलाने की दृष्टि से प्रशासकीय, पुलिस व न्यायालयीन सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक-आर्थिक विकास व जनकल्याण आदि दृष्टियों से नौकरशाही विभिन्न विशिष्ट संवर्गों जैसे कृषि, सिंचाई, स्वास्थ्य, सहकारिता, पशुपालन, शिक्षा, ग्रामीण एवं नगरीय विकास, अनुसूचित जाति, अनसूचित जनजाति, महिला एवं बाल विकास, लोक निर्माण, वन एवं सामाजिक वानिकी में बंटी होती है।

वृत्तिकार वर्ग में विभिन्न विशिष्ट वृत्तियों के प्रशिक्षित विशेषज्ञ आते हैं जैसे शिक्षक, वकील, इंजीनियर, डाक्टर, टेक्नोक्रेट, प्रबंधक, पत्रकार आदि। आमतौर पर कम विकसित समाजों में नौकरशाह वर्ग का महत्व अधिक होता है और समाज में नौकरशाह की प्रतिष्ठा भी अधिक होती है, लेकिन जैसे- जैसे समाज में शिक्षा का प्रसार होता है, औद्योगीकरण का विकास होता है। नगरीय जनसंख्या में वृद्धि होती है और आधुनिकीकरण गतिशील होता है, समाज में नौकरशाही का महत्व घटता है और वृत्तिकार वर्ग के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। समाज जैसे-जैसे परम्परात्मक तकनीकी युयग से तकनीकी युग में और तकनीकी युग से उच्च तकनीकी युग (हाई टेक सोसायटी) में प्रवेश करता है। इंजीनियर, तक्नोक्रेट एवं प्रबंधकों की प्रस्थिति ऊँची होती है और उनके पारिश्रमिक एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि आधुनिक समाज में राजनीतिक अभिजन वर्ग, पूँजीपति वर्ग, व्यापारी वर्ग, कृषक वर्ग, बुद्धिजीवी वर्ग, नौकरशाही वर्ग, शासक वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के रूप में विभिन्न वर्गों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाईं है और निभा रहे हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि आधुनकि समाज में वर्ग व्यवस्था अहम रूप से विद्यमान है और समाज को एक नया रूप प्रदान कर रही हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ एवं अग्रवाल, भरत, यूनीफाइड समाजशास्त्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी पुस्तक प्रकाशक, खजूरी बाजार, इन्दौर, 2016

2 सिंह, रामगोपाल, भारतीय समाज, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2017

3 श्रीवास्तव, डॉ. ए.पी., समाजशास्त्र, रामप्रसाद एण्ड संस, बाल बिहार, हमीदिया रोड़, भोपाल, 2015

4 श्रीवास्तव, डॉ. ए.पी. एवं गजपाल, डॉ. एल.एस., समाजशास्त्र, रामप्रसाद एण्ड संस, बाल बिहार, हमीदिया रोड़, भोपाल, 2017

5 दीक्षित, ध्रुव कुमार, समाजशास्त्र, यूनीफाइड, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, पुस्तक प्रकाशक, खजूरी बाजार, इन्दौर, 2017